04/05/2016 Issue 053 ₹ 1

पं ग वा ड़ी मा सि क प त्रि का

तुबारि

www.pangi.in

पंगवाड़ी भाषा विकास वेबसाईट
पंगवाड़ी, हिन्दी त अंग्रेजी टाई भाषा अन्तर असी।

में हियुंता

षम्मा सिह

यक यदगार हियुंत रेहि घेन्ता तु में चेते अन्तर
मोउं चेता नेईं तेईं, कीं ला मोउं पुठ मंतर।
तें चेते अन्तर अभेईं अउं की कता?
तें चेते अन्तर अब अउं बाहर उंघता, घुरुम पोणि नेई भोसुरे पोणि पीन्ता।
तती कॉफी नेई पर थम्स-अप पीन्ता। निघि ज्याकेट नेई पर टी- सॉट लांन्ता।
रोज सानुह् कता त चा घट पीन्ता। बन्येन त अपु खोपुड़ फोटान्ता।
तें चेते अन्तर अउं चेरे तकर लहाड़ बिश्ता।

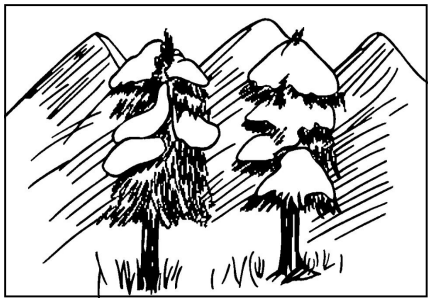

धार घेन्ता त ठनु पोण पींता।
गी त बिशिन्तु नउ अब, अउं रोज डलण जे घेन्ता।
लहाड़ त न किढ़ता अब, त अउं बग कमूं जे घेन्ता।
जुकारु, घुरेईं जाठ त न लगती अब, त अउं डेक लाई कइ जाठ लान्ता।
गीहे बाड़े पातर त अब ना देन्ते, त अउं ठेके घेईं बिश्ता।
मोउं उडारण जे जहाज त अब न एन्ता, मरते डुलते अउं चाहम पुजता।
तें ईं हाछा कार्पेट त सरकार ना दी सकता, अब खा त घोड़ि पुठ हंटण पड़ता।
खांजे त मेतु अब्बल अब्बल, पर अब अउं न मस्तिन्ता।
अब अउं कोठि अन्तर न बिश्ता। दाढ़ी मुंछे न लमीण देन्ता।
अउं अपु दुवार ना खुड़कता, पर उघाड़ रखता।
त दुआ कता 'एई गा दुबारी, ए हियुंता।
किस कि तोउ केईआं अउं ना रज्जिन्ता।

दॉदू कथा

दॉदू धूप बिश कइ सोचुण लगो थिया कि आज गभुरु कोठि रेहि गे। तपल गभुर बोते, 'दॉदूआ नमस्ते।' दॉदू बोता, 'गभुरो! कोठि थिए अपल तकर, होर अतो हल्ला किस? तेन्हि बोलु, 'असी सोभि मी कइ पालटि की। रुपेई घठ भोई गे, त असी दुकानदार केआं समान उधार निया।' तोउं बोलु, 'दॉदूआ अब असी यक कथा शुणए।' ईं शुण कइ दॉदू खुश भोई गा। 'गभुरो शुणे! आज अउं तुसी यक खलीफे कथा शुणांता।

यक खलीफा थिआ। से बोडा न्याय करणेवाड़ा त अब्बल मेहणु थिया। खलीफा दिन भई राज मेहले कम हेरता त ब्यादी अपु कमे बदले धियाड़ी हिसाब जोई सरकारी खज़ाने केआं टाई मोहर घिन घेन्ता। गीहे खर्चे हिसाब जोई से रक्म सुआ घठ थी। यक रोज खलीफे बेगमे तसे छने-आरे कियु, कि टाई रोजे धियाड़ी तुस पहेलेईं घिन ऐईएल त

तुबारि संपादकीय टीम

♦अस इ उम्मिद करुं लगो से कि एण बाड़े रोज अन्तर सुआ मेहणु इस कम अन्तर सहयोग कते।

♦इस तुबारि मासिक पत्रिका समाचार पत्र एक्ट अन्तर रिजिष्ट्रि नेई भो। सिर्फ पांगी घाटि अन्तर पढ़ूं जे इ पत्रिका शुरु किओ असी।

♦तुबारि यक अवाणिज्यिक पत्रिका भो।

♦तुबारि पत्रिका कोई मेहणु, जनजाति, त संस्कृति गलती कढ़ेण जे नेई छपाण लगो। अगर कोइ ईं सोचता बि त अस जिम्मेबार नेई।

♦छपाणे पेह्ले सोब आर्टिकल दुई टाई पांगेई मेहणु हरालो असे। इ त खुलि बोक असी कि पेहली बार पांगवाड़ी लिखणे सुआ मुशकिल भुन्ती त गलती बि भुन्ती। अगर कोई लिखणे गलती असी त असी जे जरूर बोले। त अस तसे होरे संस्करण पुठ ठीक करणे कोशिश कते।

♦आर्टिकल्स ना मिएल, या घाटि मेहणु के मदद ना मिएल त तुबारि पत्रिका कदि बि बंद भुई सकती।

♦कोई चीज छपां असी या नेई छपां जे तुबारि संपादकीय टीमे पुरा अधिकार असा।

♦अस किलाड़ केन्द्रीय पुस्तकालय, त बजार राखे ठेके भेएड़े हरिरामे दुकान अन्तर तुबारि ड्रॉप बॉक्स पुठ बि अपुं सुझाव त अर्टिक्लस रखुं जे सुविधा किओ असी।

♦अस सोबी पांगेई मेहणु जे हात जोड़ कइ निवेदन कते कि, तुस बि कोई अच्छा अर्टिक्ल, पुराणी या नोवी कथा, कहावत, कविता, त नोवे घीत (पंगवाड़ी अन्तर) लिख कइ छपां जे हेंन्न दिए।

तुबारि संपादकीय टीम
9418431531
9418429574
9418329200
9418411199
9418904168
9418721336

CC

ईद पुठ गभुरु जे नउए झिणे घनते। बेगमे छने-आरे शुण कइ खलीफे जवाब दुतु, 'तें मगुण ठीक असु। पर अउं शुई तकर जींता ना रेहा त राज्य कर्ज़ कोउं भरता? पहेले तु खुदा केआं में जिन्दगी टाई रोजे पटटा लिखवाई कइ घिन आई। तढ़िया पता अउं टाई रोजे धियाड़ी उधार घिन एन्ता।' तसे बेगम केंई एस बोकि कोई जवाब न थियु। तोउं दादु बोलु, 'गभुरो! पालटी करीण या मी कइ खुशी मनाण खरु असु। पर अपु जेब खर्च अन्तरा, उधार नी कइ ना। कोई ईं कम ना करे जेसे बेलि तुं बोडी शरम भोई घिएल। सोब गभुरु सोहो करे कि दश रुपेई बुचा अठ रुपेई खर्च कते त दुई रुपेई बचाई रखते जे कि जरुरते टेम पुठ कम एईएल।' त गभुर बोलु 'दॉदूआ! असी माफ कइ छड़। इढ़िया पता अस कदि ईं कम ना कते।'

रणापे राणि कथा

Source: Anonymous

यक ग्रां यक पंच थिआ। से ना भगवान मन्तथ ना केसे मेहणु हेर डरतथ। तस ग्रां यक रणापे राणि बि भुन्तिथ। तसे केसे होर जुओई झगड़ा भो थिया। त से रणापे राणि पंच केई घेई कइ बोती कि में नरहा-करहा करिणं दिए। जे पंच भगवान ना मानता होर मेहणु हेर ना डरताथ से कि रणापे राणि हेर कइ खाक डरता ना? त से बिचारी रोज के बोतिथ 'में पंची करीण दिए बे, कोया! में पंची करीण दे।'

पेहले पेहले त पंचे तस पुठ ध्यान ना दिता। पर जीं दिन बितते गा त तेस जिल्हाणु हेर कइ तस लेहर एई घेन्तिथ। से रणापे राणि बिचारी तसे दुवार अगर दिन भई बिश्ती रेहन्तीथ।

पता यक रोज भ्यागे से पंच सोचता कि 'ओ यारा, बेशक अउं ना भगवान ना मेहणु हेर डरता, फिर बि इ रणापे राणि पंची कइ छंता। ना त आ रोज इठ एई एई कइ मोउं तंग कइ छांन्ति। त तेन तेस रोज पेहले तसेरी पंची कइ छड़ी।

इस कथा अन्तर शिचणे बोक इ असी कि भाई असी कदि बि हार ना मानीण। अगर अस धिरज जुए काम कते रेहन्ते त जरुर कामयाव भोई घेन्ते।

दॉद् अपु पोतुर जे बोलुण लगो असा ....

बबीता चौकी

ADVERTISEMENT/ BEST WISHES FOR MARRIAGES, BIRTHDAYS, RETIREMENTS Etc. Please 9418429574

एडस बीमारी इन्सान जोई यक लिंगि सम्बन्ध बणाणे बोलि केसे बी एडस एई घेन्ता।... कॉंडोम सिर्फ 18% सुरक्षा कता।... एडस मेहणु के जिसम अन्तर कम से कम 7 केआं 10 साल तकर कोई लक्ष्ण नजर न एन्ते।